अतीतवत्थु

अतीते पठमकप्पे चतुप्पदा सीहं राजानं अकंसु, मच्छा आनन्दमच्छं, सकुणा सुवण्णहंसं। तस्स पन सुवण्णहंसराजस्स धीता हंसपोतिका अभिरूपा अहोसि। सो तस्सा वरं अदासि। सा अत्तनो चित्तरुचितं सामिकं वारेसि। हंसराजा तस्सा वरं दत्वा हिमवन्ते सब्बसकुणे सन्निपातापेसि। नानप्पकारा हंसमोरादयो सकुणगणा समागन्त्वा एकस्मिं महन्ते पासाणतले सन्निपतिंसु। हंसराजा अत्तनो चित्तरुचिंतं सामिकं आगन्त्वा गण्हतूति धीतरं पक्कोसापेसि। सा सकुणसंघं ओलोकेन्ती मणिवण्णग्गीवं चित्रपेखुणं मोरं दिस्वा अयं में सामिको होतूति आरोचेसि। सकुणसंघा मोरं उपसङ्कमित्वा आहंसु–सम्म मोर! अयं राजधीता एत्तकानं सकुणानं मज्झे सामिकं रोचेन्ती तयि रुचिं उप्पादेसीति। मोरो अज्जापि ताव में बलं न पस्ससीति अतितुट्ठिया हिरोत्तप्पं भिन्दित्वा ताव महतो सकुणसङ्घस्स मज्झे पक्खे पसारेत्वा नच्चितुं आरभि। नच्चन्तो अप्परिच्छन्नो अहोसि। सुवण्णहंसराजा लज्जितो इमस्स नेव अज्झत्तसमुट्ठाना हिरि अत्थि न बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं। नास्स भिन्नहिरोत्तप्पस्स मम धीतरं दस्सामीति सकुणसङ्घमज्झे इमं गाथमाह–

रुदं मनुञ्ञं रुचिरा च पिट्ठी, वेळुरियवण्णूपनिभा च गीवा।
व्याममत्तानि च पेक्खुणानि, नच्चेन ते धीतरं नो ददामीति।।

तत्थ **रुदं मनुञ्ञन्ति** तकारस्स दकारो कतो! रुदं मनापं वस्सितसद्दो मधुरोति अत्थो। **रुचिरा च पिट्ठीति** पिट्ठीति ते चित्रा चेव सोभना च। **वेळुरियवण्णपनिभाति** वेळुरियमणिवण्णसदिसा। **व्याममत्तानीति** एकव्यग्गमप्पमाणानि। **पेक्खुणानीति** पिञ्जानि। **नच्चेन ते धीतरं नो ददामीति** हिरोतप्पं भिन्दित्वा नच्चितभावेनेव ते एवरूपस्स निल्लज्जसस्स धीतरं नो ददामीति–

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में, प्रथम कल्प में चौपायों ने सिंह को (अपना) राजा बनाया, मत्स्यों ने **आनन्द मत्स्य** को और पक्षियों ने **सुवर्ण** हंस को। उस **सुवर्ण** हंसराज की लड़की, हंस-पुत्री सुन्दरी थी। उस (हंसराज) ने उसे वरदान दिया। वह अपनी इच्छानुकूल स्वामी चुने। हंस-राज ने उसे वरदान दे, हिमवन्त (-प्रदेश) के सभी पक्षियों को एकत्रित करवाया। भांति-भांति के हंस, मयूर आदि पक्षि-गण आकर, एक विशाल पाषाण-तल (पर्वत-शिला) पर एकत्र हुए। हंसराज ने–'आकर, अपनी इच्छा के अनुकूल स्वामी चुनो', अपनी पुत्री को बुलवाकर कहा। उसने पक्षि-समूह को देखते हुए, मणि रंग की ग्रीवा तथा चित्रित पक्षधारी मयूर को देख, यह मेरा स्वामी हो, विचार किया। पक्षियों ने मयूर के पास जाकर कहा–'मयूर! इस राज-धीता ने इतने पक्षियों के बीच स्वामी खोजते हुए, तुममें अपनी रुचि उत्पन्न की (तुमको चुना) है।'

मयूर ने, 'तो क्या वह आज भी मेरे बल को न देखती' (कह) अति प्रसन्न हो, लज्जा-भय छोड़कर, विशाल पक्षि-सङ्घ के मध्य पंख पसारकर, उसने नाचना आरम्भ कर दिया। नाचते समय वह आवरण-रहित (नग्न) हो गया। सुवर्ण हंसराज ने लज्जित हो, 'इसमें न तो अन्दर की लज्जा है, न बाहर का भय। इस लज्जा-भय-रहित को मैं (अपनी) लड़की न दूँगा।' (कह) पक्षि-सङ्घ के मध्य यह गाथा कही–

यद्यपि तेरा स्वर मनोहारी है, पीठ सुन्दर है, गर्दन बिल्लौर-वर्ण की है, पङ्खड़ियाँ (पङ्ख) दो हाथ (=व्याम) परिमाण की हैं, (तथापि) तेरे नाचने के कारण, तुझे लड़की नहीं देता हूँ।

रुदं मनुञ्ञंति–'रुदं' में 'त' का 'द' कर दिया गया। रुदं, मनापं का अर्थ है, मनोज्ञ, मधुर शब्द। **रुचिरा च पिट्ठीति**–तेरी पीठ भी चित्रित तथा शोभासम्पन्न है। **वेलुरियवण्णूपनिभाति**–बिल्लौर-मणि के वर्ण-सदृश। **व्याममत्तानीति**–एक व्याम (=दो हाथ) भर। **पेखुणानीति**–पङ्खड़ियाँ। **नच्चेन ते धीतरं नो ददामीति**–'लज्जा-भय त्यागकर नाचने के कारण

वत्वा हंसराजा तस्मिं येव परिसमज्झे अत्तनो भागिनेय्यहंसपोतकस्स धीतरं अदासि। मोरो हंसपोतिकं अलभित्वा ततोव उड्डेत्वा पलायि। हंसराजापि अत्तनो वसनट्ठानमेव गतो।

सत्था न भिक्खवे! इदानेवेस हिरोत्तप्पं भिन्दित्वा रजनसासना परिहीनो पुब्बे इत्थिरतनपटिलाभतोपि परिहीनोयेवाति इमं धम्मदेसनं आहरित्वा अनुसन्धिं घटेत्वा जातकं समोधानेसि। तदा मोरो **बहुभण्डिको** भिक्खु अहोसि। हंसराजा पन **अहमेवाति**।

नच्चजातकं

●

३. सम्मोदमानजातकं

सम्मोदमानाति इदं सत्था कपिलवत्थुं उपनिस्साय निग्रोधारामे विहरन्तो ञातककलहं आरब्भ कथेसि। सो कुणालजातके आविभविस्सति।

पच्चुपन्नवत्थु

तदा पन सत्था ञातके आमन्तेत्वा महाराजानो ञातकानं अञ्ञमञ्ञं विग्गहो नाम न युत्तो तिरच्छानगतापि हि पुब्बे समग्गकाले पच्चामित्ते अभिभवित्वा सोत्थिम्पत्ता यदा विवादमापन्ना तदा महाविनासं पत्ताति वत्वा ञातिराजकुलेहि याचितो अतीतं आहरि–

अतीतवत्थु

अतीते बाराणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते बोधिसत्तो वट्टकयोनियं निब्बत्तित्वा अनेक वट्टकसहस्सपरिवारो अरञ्ञे वसति। तदा एको वट्टकलुद्दको तेसं वसनट्ठानं गन्त्वा वट्टकवस्सितं कत्वा तेसं सन्निपतितभावं ञत्वा तेसं उपरि जालं खिपित्वा परियन्तेसु मद्दन्तो सब्बे एकतो कत्वा पच्छिं पूरेत्वा घरं गन्त्वा ते विक्किणित्वा तेन मूलेन जीविकं कप्पेति।

ही, ऐसे निर्लज्ज तुमको लड़की नहीं देता हूँ' कह, हंसराज ने उसी परिषद् के मध्य अपने भान्जे हंस-पुत्र को लड़की दे दी। हंस-पुत्री को न पा मयूर, लज्जित हो, वहाँ से उड़कर भाग गया। हंसराज भी अपने निवास-स्थान को प्रस्थित।

बुद्ध ने 'भिक्षुओ! न केवल अब ही यह लज्जा-भय त्यागवश (बुद्ध-) शासन-रूपी-रत्न से पतित हुआ है, पूर्व-जन्म में भी स्त्री-रत्न की प्राप्ति से इसे रहित होना पड़ा था।' यह धर्म-देशना कह, परिणाम संघटित कर, जातक का सारांश प्रस्तुत कर दिया। उस समय का मोर (अब का) बहुत सामान रखनेवाला (**भिक्षु**) था और **हंसराज** तो मैं ही था।

नच्चजातक

●

३३. सम्मोदमान जातक

'सम्मोदमानाति....', यह गाथा, शास्ता ने **कपिलवस्तु** के समीप **निग्रोधाराम** में रहते समय सम्बन्धिजनों के कलह को लक्ष्य कर कही। वह कथा **कुणाल-जातक** (संख्या ५३६) में आयगी।

क. वर्तमान कथा

उस समय बुद्ध ने सम्बन्धिजनों को आमन्त्रित कर, 'महाराजाओ! सम्बन्धिजनों को परस्पर लड़ना-झगड़ना उचित नहीं। पूर्व समय में तिरश्चीन (=पशु-पक्षी) योनि में पैदा होने पर भी, एकमत (समग्रभाव) से शत्रु को पराजित कर, सुरक्षित रह, जब विवाद में पड़ गये तो महाविनाश को प्राप्त हुए' कह, सम्बन्धिजनों राजकुल के याचना करने पर पूर्व-जन्म की कथा कही-

ख. अतीत कथा

पूर्व समय में **वाराणसी** नृप **ब्रह्मदत्त** के राज्य करते समय, बोधिसत्त्व बटेर की योनि में उत्पन्न होकर, सहस्रों बटेरों के साथ जंगल में रहते थे। उस समय बटेरों का एक आखेटक (व्याघ) उनके वास-स्थान पर जा वह बटेरों का-सा शब्द कर उनको एकत्र हुए, समझ, उन पर जाल फेंकता; और सिर पर से दबाते हुए, सबको इक्ट्ठा करके, टोकरी भर, घर जाकर, उन्हें बेच, उस आमदनी (=मूल्य) से जीविका चलाता था।